विजॉय सी. चौधरी

आश्रय

जब बिल्लियां हों शाकाहारी

रंजीता बिस्वास

कोलकाता का करुणा कुंज बिल्लियों और कुत्तों के लिए अनूठा आश्रय स्थल है। यहां ये जीव चूहे, मछली, या मुर्गे को अपना आहार नहीं बना रहे हैं। ये शाकाहारी भोजन ले रहे हैं और ऐसा लगता है कि वे अपने प्रिय मांसाहारी आहार के बिना भी खूब तंदुरुस्त हैं।

कोलकाता के बाहरी छोर पर स्थित करुणा कुंज परिसर में प्रवेश करने पर आपको मुर्गाजाली से ढका एक बड़ा सा बाड़ा दिखेगा जहां भांति-भांति की बिल्लियां धूप सेंकती, खेलती मिलेंगीं। बाड़े की दीवारों पर रंगबिरंगे चित्र बने हैं। बिल्लियों के मनबहलाव के लिए खिलौने, उनके चढ़ने के लिए ताख, लकड़ी के लट्ठे और तार की बनी सुरंगें भी मौजूद हैं। करूणा कुंज का संचालन करने वाले कम्पैशनेट क्रूसेडर्स ट्रस्ट के संस्थापक देबाशीष चक्रवर्ती स्पष्ट करते हैं, ''जैसे हमें रंग और मनोरंजन के साधन पसंद आते हैं, वैसे ही बिल्लियों को भी पसंद आते हैं, हम चाहते है कि वे खुश रहें।'' चक्रवर्ती पशु अधिकार आंदोलनकारी और सांसद मेनका गांधी द्वारा स्थापित पीपल फ़ॉर एनिमल्स के कोलकाता स्थित ट्रस्टी भी हैं।

करुणा कुंज में मालिकों द्वारा छोड़ दिए गए या घायल-बीमार पशुओं के अलावा

कोलकाता के बाहरी इलाके में स्थित पालतू जीव आश्रय एवं आवास स्थल करुणा कुंज में छिपने, खेलने और आराम करने की सुरक्षित जगहों के कारण बिल्लियां खुश रहती हैं।

घर बैठे पालतू जीवों का इलाज

कम्पैशनेट क्रूसेडर्स ट्रस्ट की पेटएक्सप्रेस उन लोगों के लिए किसी वरदान से कम नहीं जो किसी कारण अपने पालतू पशु को पशु चिकित्सक के पास नहीं ले जा पाते। इस वाहन में पूर्णतया वातानुकूलित उपचार कक्ष और ऑपरेशन थियेटर है। उपचार या शल्य चिकित्सा के दौरान अपने पालतू पशु को दिलासा देने के लिए मालिक चिकित्सक के साथ बैठ सकते हैं। आपात सेवा के लिए यह वाहन 24 घंटे उपलब्ध है।

पेटएक्सप्रेस गैदर्सबर्ग, मैरीलैंड के द विलियम एंड शार्लट पार्क्स फ़ाउंडेशन फ़ॉर एनिमल वेलफ़ेयर से दान में मिली है। इसका उद्घाटन वर्ष 2002 में वर्ल्ड होमलेस एनिमल डे के मौके पर कोलकाता स्थित अमेरिकन सेंटर के तत्कालीन निदेशक रेक्स मोज़र ने किया था।

उन पालतू पशुओं की भी देखभाल की जाती है जिनके मालिक कुछ दिन के लिए कहीं बाहर जाते हुए उन्हें यहां भर्ती करा जाते हैं। इसके लिए उन्हें शुल्क चुकाना होता है। कुछ बिल्लियां लंबे समय से यहीं हैं। इनमें से कुछ आवारा फिरने वाली ऐसी बिल्लियां हैं जिन्हें कोई राजनयिक या स्थानीय निवासी यहां भर्ती करा गए हैं और उनकी देखभाल के लिए धन भी भेजते हैं। कुछ बिल्लियां मालिक के किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह के परिणामस्वरूप यहां हैं जो पालतू पशुओं को पसन्द नहीं करता, तो कुछ घर के किसी बच्चे को एलर्जी के कारण, कुछ बिल्लियां इसलिए भी यहां पहुंचा दी गई हैं क्योंकि उनके परिवारी किसी ऐसे मकान में किराए पर चले गए हैं जहां मकान मालिक पालतू पशु रखने की अनुमति नहीं देते। शरण-सह-पशु आवास की यह व्यवस्था एक अनूठा प्रयोग है। देबाशीष चक्रवर्ती कहते हैं, ''यह शायद नई अवधारणा है और और कहीं आजमाई भी नहीं गई, इसलिए कुछ अजीब लग सकती है।''

बिल्लियों को शाकाहारी भोजन देने की बात भी अटपटी सी लगती है, विशेषकर बंगाल में, क्योंकि यहां मछलियां के प्रति बिल्लयों के प्रेम के बारे में कई किस्से मिलते हैं। क्या विशिष्ट रूप से शिकार करने के लिए बना प्राणी मांस के बिना स्वस्थ रह पाएगा? चक्रवर्ती हमें समझाते हैं, ''हम उन्हें जो शाकाहारी आहार दे रहे हैं उसमें प्रोटीन सहित सभी आवश्यक पोषक तत्व हैं। आप देख ही रहे हैं कि वह सभी तंदुरूस्त हैं। असल में हमारे संचालक मंडल के कुछ सदस्य शाकाहारी हैं। वह सोच रहे थे कि क्या पोषण को कम किए बिना बिल्लियों को शाकाहारी भोजन उपलब्ध करवाया जा सकता है।''

काफी खोजबीन के बाद आखिर एक ऐसी इतालवी कम्पनी का पता चला जो बिल्लियों के लिए पौष्टिक, शाकाहारी आहार उपलब्ध करवा रही थी। इस आहार की विशेषता थी कि इसमें बिल्लियों के लिए आवश्यक एमिनो एसिड टॉरीन की पर्याप्त मात्रा थी। अब बिल्लियों को दिन में दो बार यह आहार खिलाया जाता है। इस आहार के टुकड़े पानी में भिगोने पर फैलते हैं और उनसे पेट भर जाता है। आहार दिन में दो बार दिया जाता है। बिल्लियां बड़े चाव से इन्हें खाती हैं। इस प्रक्रिया की शुरुआत के बारे में बताते हुए चक्रवर्ती कहते हैं, ''पहले हमने बिल्लयों के स्वास्थ्य की जांच की और उनका वजन भी नापा। फिर दस बिल्लियों को छांटकर उन्हें यह आहार खिलाया ताकि पता चल सके कि वे इन्हें पसन्द करती हैं या नहीं। हमने इस आहार को दूध में मिलाया ताकि बिल्लयां इसे खुश होकर खा लें।''

वेजिटेरियन सोसायटी ऑफ़ युनाइटेड किंगडम (http://www.vegsoc.org/info/catfood.html) के अनुसार बिल्लियां प्राकृतिक रूप से मांसाहारी होती हैं और उनके स्वेच्छा से अपने भोजन से मांस को छोड़ने की उम्मीद नहीं की जा सकती। इसलिए यदि उन्हें मांस के अलावा अन्य भोजन अच्छे से भी दिया जा रहा हो तो भी वे पक्षियों या चूहों का शिकार करेंगीं। बिल्लियों को कुछ वानिस्पतिक खाद्य पदार्थ पसंद आ सकते हैं लेकिन ज़्यादा फ़ाइबर और पॉलीअनसैचुरेटेड फ़ैटी एसिड वाला शाकाहारी भोजन उनके स्वास्थ्य के लिए नुकसानदायक हो सकता है।

इंटरनेशनल वेजिटेरियन यूनियन (http://www.ivu.org/faq/animals.html) के अनुसार शाकाहारी बिल्लियों को विशेष भोजन उपलब्ध कराना चाहिए क्योंकि उन्हें टॉरिन की ज़रूरत होती है जो मांस में मिलता है। सिंथेटिक टॉरिन भी विकसित किया गया है जो बाज़ार में उपलब्ध बिल्लियों के मांसाहारी खाद्य पदार्थों में इस्तेमाल होता है।

1970 के दशक में चक्रवर्ती डॉक्टर बनने के लिए पढ़ाई कर रहे थे, उसी बीच उन्होंने पशु मनोविज्ञान में एक कोर्स किया। वह याद करते हैं,''बचपन से ही मैं मां को बेसहारा पशुओं को शरण या भोजन देते देखता था। मेरे लिए यह निर्णय सहज ही था।'' उन्होंने मालिकों द्वारा छोड़ दिए कटखने कुत्तों को पालने से शुरुआत की।

हाल ही में कोलकाता स्थित अमेरिकन सेंटर के निदेशक डगलस जी. केली भी करुणा कुंज देखने आए और बिल्लियों को खुला घूमते देखकर बहुत

फोटो साभार: कंपैशनेट क्रूसेडर्स ट्रस्ट

ज़्यादा जानकारी के लिए:

कंपैशनेट क्रूसेडर्स ट्रस्ट

http://www.animalcrusaders.org/door.html

प्रभावित हुए। वह कहते हैं, ''मैंने इतने सारे कुत्ते-बिल्ली आवारा घूमते देखे हैं। मैं सोचता था कि क्या कोई गैर-सरकारी संगठन इनके लिए कुछ कर भी रहा है? जब मैंने करुणा कुंज और अमेरिकन सेंटर के कंपैशनेट क्रूसेडर्स (बॉक्स देखें) के साथ पूर्व जुड़ाव के बारे में सुना तो मैं यहां आकर खुद को इस प्रयास के लिए समर्थन व्यक्त करने से नहीं रोक पाया।''

केली ने ज़ायरे, कांगो में भी बिल्लियों को शाकाहारी भोजन करते देखा था। वह बताते हैं, ''जो गरीब लोग मांस या मछली नहीं खरीद पाते और याम खाते हैं, अपने पालतू पशुओं को चावल और याम के पत्तों की खिचड़ी खिलाते हैं। मनुष्यों की ही तरह पशु भी अपनी खानेपीने की आदतों में सामंजस्य बिठा लेते हैं और शाकाहारी भोजन भी खाने लगते हैं।''

करुणा कुंज का वातावरण इस के नाम के अनुरूप ही है। यहां 300 बिल्लियों की देखभाल की व्यवस्था

> **''मुझे उस आदमी के धर्म में कोई दिलचस्पी नहीं है जो अपने कुत्ते और बिल्ली के साथ अच्छा बर्ताव न करता हो।''**
>
> -अब्राहम लिंकन
> अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति

ऊपर बाएं: कोलकाता स्थित अमेरिकन सेंटर के निदेशक डगलस जी. केली करुणा कुंज में।

ऊपर: करुणा कुंज में स्वास्थ्य जांच के दौरान बिल्लियों का वज़न लिया जा रहा है।

है हालांकि इतनी बिल्लियां यहां कभी रही नहीं। फिलहाल यहां 39 कुत्ते, 52 बिल्लियां और एक अंधा बंदर है। 12 बिल्लियां विकलांग हैं, इनमें से एक अंधी है, एक तंत्रिका विकार से ग्रस्त है और पेड़ पर नहीं चढ़ सकती।

गृहिणी माजिदा इस्लाम करुणा कुंज के नियमित दानदाताओं में से हैं। उनकी कुछ बिल्लियां यहां की स्थायी वासी हैं तो कुछ को वह यात्रा पर निकलते हुए यहां छोड़ जाती हैं। वह बताती हैं कि अपनी गैरमौजूदगी में बिल्लियों की ठीक से देखभाल के लिए किसी विश्वस्त व्यक्ति के न मिल पाने के कारण वह अपनी बिल्लियों को करुणा कुंज में छोड़ जाती हैं जहां वे खुश रहती हैं और उनकी अच्छी देखभाल भी होती है। खुद माजिदा भी खासी निश्चिन्त रह पाती हैं। वह कहती हैं कि घर पर वह अपनी बिल्लियों को मछली और भात ही खिलाती हैं और उन्हें कोई परेशानी नहीं होती।

वाशिंगटन के अखबार एनिमल पीपल (http://www.animalpeoplenews.org/) की प्रेसिडेंट और प्रकाशक किम बार्टलैट ध्यान दिलाती हैं, ''कोलकाता में मनुष्यों के लिए कल्याणकारी सेवाओं के साथ-साथ पशुओं के लिए भी कल्याणकारी सेवाओं की आवश्यकता है। हमने कम्पैशनेट क्रूसेडर ट्रस्ट की चिकित्सा सेवा देखी और उसे काफी नई प्रकृति का पाया ... हमें बहुत अच्छा लगा कि देबाशीष बहुत रचनात्मक मानसिकता के धनी व्यक्ति हैं।''

करुणा कुंज में बिल्लियों के एक छोटे दवाखाने के अतिरिक्त पालतू पशुओं का एक कब्रगाह भी है जहां नाममात्र की राशि देकर शहर के लोग अपने पालतू प्राणियों को दफना सकते हैं। उनके लिए प्रार्थना करने के लिए भी जगह है।

केंद्र आसपास के गांवों के मवेशियों के लिए चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने के अलावा पशुओं की देखभाल के लिए ग्रामीणों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाता है। एक तिपहिया रोगी वाहन गांव की तंग गलियों में जाकर बीमार पशुओं को उपचार के लिए लाता है।

करुणा कुंज के अलावा ट्रस्ट आशारी (एनिमल शेल्टर हॉस्पिटल कम रिसर्च इंस्टीट्यूट) नामक एक बहुउद्देश्यीय पशु अस्पताल भी चलाता है। चक्रवर्ती बताते हैं कि वर्ष 2001 में 1.7 हैक्टेयर जमीन पर बना यह अस्पताल अब तक 70,000 पशुओं का उपचार कर चुका है। यहां नसबन्दी के बाद 25 बिल्लियां और कुछ कुत्ते रखे गए हैं। उन्हें शाकाहारी भोजन नहीं दिया जाता। अपंग पशुओं को अक्सर करुणा कुंज भेज दिया जाता है। लोगों को पशुओं को गोद लेने के लिए प्रेरित करने के प्रयास भी चलते रहते हैं।

लोगों का अपने पशुओं को घर वापस ले जाना देबाशीष को गहरा संतोष देता है। कभी-कभी ऐसे लोग भी अपने पशुओं को वापस ले जाते हैं जो उनके लिए स्थायी आवास का आवेदन करके पूरा शुल्क भी जमा करवा चुके होते हैं। वह कहते हैं, ''आज कम बिल्लियों का यहां दिखना (एक समय पर यहां 120 बिल्लियां थीं) शायद एक शुभ लक्षण है क्योंकि इससे पता चलता है कि आज मालिक लोग अपने पशुओं की देखभाल की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तैयार हैं। हम उन्हें समझाते हैं कि उनके पालतू पशुओं को उनके स्नेह और देखभाल की ज़रूरत है।''

***रंजीता बिस्वास** स्वतंत्र पत्रकार हैं और कोलकाता में रहती हैं। वह कथा-साहित्य लिखने के अलावा साहित्यिक अनुवाद भी करती हैं।*